

प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन

डॉ. पूजा सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षा शास्त्र) बाबा प्रसिद्ध नारायण महाविद्यालय, बगथरी, मुरारा, जौनपुर

ABSTRACT

दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा के कुछ आधार इस प्रकार हैं – नैतिक और वैधानिक जवाबदेही को पूरा करना, उपयुक्त शिक्षण, प्रविधियों का आवश्यकतानुसार चयन करना, विद्यालय एवं छात्रों के बीच समन्वय स्थापित करना, पर्यावरण एवं समाज उपयोगी कार्यों के प्रति छात्रों को क्रियाशील बनाये रखना तथा आचरण की शुद्धता एवं स्वस्थ नागरिकता की भावना जागृत करना। दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापकों में व्यवहार, कार्यकुशलता, शिक्षण व्यवहार, ज्ञान पदार्पण आदि का विकास करके परिवर्तन लाया जा सकता है। शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

KEYWORDS: दक्षता, प्रारंभिक शिक्षा, शिक्षण प्रक्रिया

प्रस्तावना

मानव विकास के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। बिना शिक्षा के मानव का सर्वागीण विकास संभव नही है। बालक एवं बालिका ज्यों–ज्यों उम्र में बढ़ते है, उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में ज्ञार्नाजन की आवश्यकता होती है। शिक्षा बुराइयों को दूर कर अन्तरिक गुणों को प्रकाशित करती है। इसी प्रकाश में व्यक्तित्व का निर्माण होता है। राष्ट्र के विकास का आधार शिक्षा है। जिस राष्ट्र में शिक्षित व्यक्तियों की संख्या जितनी अधिक होती वह देश उतना ही अधिक विकास करता है। क्योंकि राष्ट्र का विकास उस राष्ट्र की जन साधारण शिक्षा पर ही निर्भर है।

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में प्रारम्भिक शिक्षा की प्राथमिकता महत्वपूर्ण है। यह प्रथम सीढ़ी है, जिसे पार करके ही राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकता है। प्रारंभिक शिक्षा राश्ट्रीय जीवन का अभिन्न अंग है। प्रारंभिक शिक्षा राष्ट्रीय विचार धारा एवं चरित्र निर्माण की कुन्जी है। यह मानव विकास के समस्त उपादानों में सर्वोत्तम है। प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था का प्रथम सोपान है। प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के स्तर को प्रभावित करती है। शिक्षा मानव के विकास की जननी है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का उत्तम साधन है। शिक्षा वह ज्ञान है, जो बालक रुपी हीरे की कलाश रूपी बुराइयों को दूर कर उनके आन्तरिक गुणों को जगमगाता है। जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

शिक्षक का कार्य शिक्षा देना है शिक्षण किस प्रकार दिया जाय इनके लिए शिक्षक को प्रशिक्षण मिलना आवश्यक है। दिन–प्रतिदिन सामाजिक ढांचे एवं उसकी उपयोगिता एवं जरूरत वदलती रहती है। नित्य नवीन ज्ञान प्रकट हो रहे है और नया सिद्धान्त प्रतिपादित हो रहे है। अतः समय–समय पर अपने शिक्षकों, प्राचार्य आदि द्वारा परिवर्तित पाठ्यक्रम एवं दक्षताओं की परिवर्तित पाठ्यक्रम विषय ज्ञान एवं दक्षताओं से परिचित करावे एवं उनके शिक्षण में गुणवत्ता लाने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण बाद में शिक्षण कौशल में सुधार के साथ–साथ छात्रों के अधिगम उपलब्धि में सुधार हेतु दक्षता आधारित प्रशिक्षण डाइट व जिला शिक्षा केन्द्र के माध्यम से ब्लाक एवं संकुल स्तर स्कूल दिया जा रहा है। "प्रशिक्षण से शिक्षकों में नई ऊर्जा का संचार होता है।"

अतः दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के लिए शिक्षकों को दक्षता आधारित प्रशिक्षण देकर नई शिक्षण विधाओं, नये कौशल तथा पाठ्यक्रम, कठिनाइयों का निदान कर स्तर में वृद्धि हेतु दक्षता आधारित शिक्षण हेतु तैयार किया जा रहा है, ताकि शिक्षक अपने शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करने के साथ–साथ समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन सजगता से व्यवस्थित रूप से कर सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

बच्चों को प्रत्यक्ष या परोक्ष लाभ मिले और लक्ष्य प्राप्ति की ओर कार्यक्रम बढ़ सके, यही इस शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है। कोई भी योजना तभी सफल हो सकती है। जब उसका क्रियान्वयन क्रमबद्ध तरीके से किया जाय। प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए, प्रत्येक बालक के अधिकार की संवैधानिक कल्पना को साकार करने के लिए और सभी के लिए शिक्षा की गुणवत्ता की जरूरत के प्रति संवेदनशील संस्थाओं मं प्रारंभिक शिक्षा का विकेन्द्रीकरण तथा प्रबंधन में सहभागिता के लिए अधिनियम बनाया गया है। जिसका प्रयोग कर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्यः

शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं–

1. प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का छात्र–छात्राओं पर प्रभाव का अध्ययन करना।

2. दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया से छात्र और छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐंः

शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः

1. प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
2. दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया से छात्र और छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

न्यादर्शः

लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित जनपद– कानपुर नगर (उत्तर प्रदेष) पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 50 शिक्षक प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, ब्लाक शिक्षा समन्वयक, जिला परियोजना समन्वयक तथा 2–2 अभिभावक तथा प्रत्येक 05 विद्यालयों से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 100 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनो दृष्टिकोण से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

शोध विधिः

शोध क्षेत्र जनपद– कानपुर नगर (उत्तर प्रदेष) के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रशिक्षक व अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना–01 ''प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है'' का सत्यापन।

शिक्षकों की सहभागिता के संबंध में स्वीकृति व सहमत								
			शत–प्रतिशत सहमत		60 से 80 प्रतिशत सहमत		60 प्रतिशत से कम	
क्र. संख्या	जनकारी प्राप्त करने के स्त्रोत	न्यादर्श में चयनति कुल संख्या	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षक	180	108	60.00	54	30.00	18	10.00
2.	प्रधानाध्यापक	90	65	72.20	16	17.77	9	10.00
3.	प्रशिक्षक	9	3	33.30	6	66.66	–	–
4.	अभिभावक	180	104	57.77	53	29.44	19	10.55

तालिका संख्या–01

तालिका संख्या–01 के व्याख्या एवं विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत शिक्षकों ने दक्षता प्रशिक्षण में शत–प्रतिशत सहभागिता की है। 30 प्रतिशत शिक्षक 60 से 80 प्रतिशत के बीच सहभागिता की है। लेकिन 10 प्रतिशत शिक्षक 60 प्रतिशत से कम सहभागिता की है। प्रधानाध्यापक की 65 प्रतिशत सहभागिता दक्षता शिक्षण में शत–प्रतिशत की है, तथा 60 से 80 प्रतिशत के बीच 17.77 प्रतिशत सहभागिता की है। इसी प्रकार 60 से कम 10 प्रतिशत प्रधानाध्यापक सहभागिता की है। किन्तु 33.3 प्रतिशत प्रशिक्षको का मत है कि दक्षता प्रशिक्षण में शिक्षकों की सहभागिता शत–प्रतिशत है। 66.66 प्रतिशत की 60 से 80 प्रतिशत की सहभागिता की है। इसी प्रकार 57.77 प्रतिशत अभिभावकों ने दक्षता प्रशिक्षण में शत–प्रतिशत सहभागिता की है। 29.44 प्रतिशत अभिभावकों ने 60 से 80 प्रतिशत सहभागिता की है, जबकि 10.55 अभिभावक ने 60 प्रतिशत से भी कम सहभागिता की है। अतः विश्लेषण और व्याख्या से ज्ञात होता है कि शोध क्षेत्र के अधिकांश शिक्षकों ने दक्षता आधारित प्रशिक्षण में सहभागिता की है। अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

शिक्षकों की सहभागिता के संबंध में स्वीकृति व सहमत								
			शत–प्रतिशत सहमत		आंशिक रूप से किया गया		नहीं किया	
क्र. संख्या	जनकारी प्राप्त करने के स्त्रोत	न्यादर्श में चयनति कुल संख्या	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षक	180	102	56.66	18	10	60	33.33
2.	प्रधानाध्यापक	90	60	66.66	12	13.33	18	20
3.	प्रशिक्षक	9	05	55.55	3	33.33	1	11.11
4.	अभिभावक	180	101	56.11	13	7.22	66	36.66

तालिका संख्या–02

तालिका संख्या–02 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 56.66 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि दक्षता प्रशिक्षण में विशय के कठिन अंशो का प्रभावी शिक्षण, प्रशिक्षण द्वारा पूर्व ढंग में किया है, लेकिन 10 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि आंशिक रूप से किया है तथा 33.33 प्रतिशत शिक्षकों के अभिमत परीक्षण में कठिन अंशो पर प्रभावी शिक्षण नही किया गया है। अव प्रधानाध्यापकों के अभिमत से 66.66 प्रतिशत प्रशिक्षण के ही कठिन अंशों का प्रशिक्षण पूर्ण प्रभावी ढंग से से किया गया है, तथा 13.33 प्रतिशत, आंशिक रूप में किया गया है। तथा 20 प्रतिशत प्राधानाध्यापकों का मत है कि अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षण नही किया है। साथ प्रशिक्षक के अभिमत से 55.55 प्रतिशत प्रशिक्षकों दक्षता प्रशिक्षण के विषय के कठिन अंशों का प्रभावी शिक्षण पूर्ण ढंग से किया गया है। तथा 33.33 प्रतिशत प्रशिक्षक के आंशिक रूप से किया है। साथ ही 11.11 प्रतिशत प्रशिक्षकों का अभिमत है कि प्रशिक्षण के कठिन अंशों पर प्रभावी शिक्षण नही किया गया है। इसी प्रकार 56.11 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि दक्षता प्रशिक्षण के विषय के कठिन अंशों का मत है कि शिक्षण आंशिक रूप से प्रभावी शिक्षण किया और 36.66 प्रतिशत अभिभावकों का मत है कि प्रशिक्षण में कठिन अंशों पर प्रभावी शिक्षण नही किया। उपरोक्त कथन के आधार पर इस तथ्य की पुष्टि होती है कि दक्षता प्रशिक्षण के दौरान कठिन अंशों का प्रशिक्षण प्रशिक्षकों द्वारा हुआ। अतः परिकल्पना क्र. 02 सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

शोधार्थी द्वारा शोध क्षेत्र के अनेक विद्यालयो के शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रशिक्षक व अभिभावकों के अभिमत पर आधारित निष्कर्ष प्राप्त हुआ। शोध क्षेत्र के 57.77 प्रतिशत अभिभावकों ने दक्षता प्रशिक्षण में शत–प्रतिशत सहभागिता की है। 29.44 प्रतिशत अभिभावकों ने 60 से 80 प्रतिशत सहभागिता की है। जबकि 10.55 अभिभावक ने 60 प्रतिशत से भी कम सहभागिता की है। अतः विश्लेषण और व्याख्या से ज्ञात होता है कि शोध क्षेत्र के अधिकांश शिक्षकों ने दक्षता आधारित प्रशिक्षण में सहभागिता की है।

सन्दर्भ

1. द्विवेदी देवेन्द : 'विभिन्न धर्मों को मानने वाले छात्र–छात्राओं की शिक्षा एवं धर्म के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'',शोध ग्रंथ द्वारा उद्धृत, पी–एच.डी., सी. एस. जे. एम. वि. वि., कानपुर, 2012; पृष्ठ–42.
2. श्रीवास्तव डॉ. डी. एन : 'अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन आगरा, संस्करण–1992, पृष्ठ–96.
3. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा : विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, 2005.
4. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2013.
5. गुप्ता, एस.पी.: सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1997.
6. सिंह अरूण कुमार : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, चतुर्थ संस्करण, मोतीलाल नगर बनारसीदास दिल्ली, 2001.
7. त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदनः शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश, खण्ड–5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007.